एनसीईआरटी

समाचार

जुलाई 2008

राज्य पाठ्यचर्याओं में संशोधन

एन.सी.एफ. – 2005 में बताए गए विचारों के आधार पर एन.सी.ई.आर.टी. ने स्कूली शिक्षा के सभी चरणों के लिए आदर्श पाठ्यचर्याएं और पाठ्यपुस्तकें विकसित की हैं, जो राज्यों के लिए एक नमूने के रूप में कार्य कर सकती हैं।

एन.सी.ई.आर.टी. की ओर से अप्रैल 2006 में प्रत्येक राज्य / केंद्र शासित प्रदेश को 10 लाख की वित्तीय सहायता देकर एन.सी.एफ.–2005 के परिप्रेक्ष्य में पाठ्यचर्याओं और पाठ्यपुस्तकों में संशोधन, अध्यापक शिक्षा पाठ्यचर्या एवं परीक्षाओं में सुधार और अन्य व्यवस्थागत सुधारों की प्रक्रिया आरंभ की गई। इन राज्यों / केंद्र शासित प्रदेशों ने अभिविन्यास कार्यक्रमों के आयोजन द्वारा पाठ्यचर्या सुधार की प्रक्रिया आरंभ की। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (एन.सी.एफ.–2005) को 22 भाषाओं में अनूदित किया गया, जो संविधान की आठवीं अनुसूची में सूचीबद्ध हैं। राज्यों ने अनूदित संस्करणों का मुद्रण कराया और इन्हें शिक्षकों तथा अध्यापक शिक्षकों के बीच बांटा गया। कार्यक्रमों की प्रक्रिया और संख्या हर राज्य में अलग-अलग रही।

राज्यों ने एन.सी.एफ.–2005 में की गई सिफारिशों के प्रकाश में मौजूदा पाठ्यचर्याओं की समीक्षा की। तब कुछ राज्यों ने राज्य पाठ्यचर्या रूपरेखा का विकास किया जबकि अन्य ने प्रत्यक्ष रूप से अपनी पाठ्यचर्याओं और पाठ्यपुस्तकों में संशोधन किया। बिहार, केरल, छत्तीसगढ़ और कर्नाटक जैसे राज्यों ने अपनी राज्य पाठ्यचर्या रूपरेखाओं का विकास किया है। सत्रह राज्यों में एन.सी.एफ.–2005 के प्रकाश में पाठ्यचर्याओं का संशोधन किया गया।

राज्य पाठ्यचर्याओं की समीक्षा के लिए बैठक

विद्या से अमरत्व प्राप्त होता है।

विद्यया ऽ मृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

परस्पर आवेष्टित हंस राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एन.सी.ई.आर.टी.) के कार्य के तीनों पक्षों के एकीकरण के प्रतीक हैं :
(i) अनुसंधान और विकास,
(ii) प्रशिक्षण तथा (iii) विस्तार।
यह डिज़ाइन कर्नाटक राज्य के रायचूर ज़िले में मस्के के निकट हुई खुदाइयों में प्राप्त ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी के अशोकयुगीन भग्नावशेष के आधार पर बनाया गया है।

उपर्युक्त आदर्श वाक्य *ईशावास्य उपनिषद्* से लिया गया है जिसका अर्थ है–
विद्या से अमरत्व प्राप्त होता है।

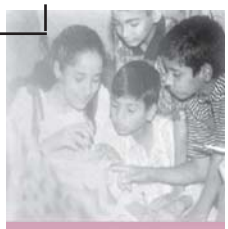

एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा गठित पाठ्यचर्या समिति ने राज्यों की संशोधित पाठ्यचर्याओं की जांच की, जिसमें इस पर विचार किया गया कि एन.सी.एफ. की संभावनाओं को इन पाठ्यचर्याओं में किस सीमा तक प्रदर्शित किया गया है।

इन बैठकों से मिली प्रतिक्रिया (फीडबैक) राज्यों के पाठ्यचर्या विकास समूहों और एन.सी.ई.आर.टी. की पाठ्यचर्या समितियों के पारस्परिक रूप से आयोजित बैठकों के माध्यम से राज्यों को प्रदान की गई।

राज्यों द्वारा की गई प्रगति के आधार पर निम्नलिखित तस्वीरें सामने आई–

बारह राज्यों / संघ राज्य क्षेत्रों में स्कूली शिक्षा के विभिन्न चरणों के लिए एन.सी.ई.आर.टी. पाठ्यचर्या और पाठ्यपुस्तकों का पालन किया गया – अंडमान और निकोबार द्वीप समूह (I-XII), अरुणाचल प्रदेश (I-XII), चंडीगढ़ (I-XII), झारखण्ड (I-XII), दिल्ली (IX-XII), गोवा (I-XII), हरियाणा (VI-XII), हिमाचल प्रदेश (VI-XII), बिहार (IX-XII), जम्मू और कश्मीर (IX-XII), सिक्किम (IX-XII), उत्तराखण्ड (IX-XII)। आंध्र प्रदेश ने कक्षा IX-XII से एन.सी.ई.आर.टी. पाठ्यचर्याओं को अपनाने पर भी विचार किया। इन राज्यों के अलावा सी.बी.एस.ई. ने एन.सी.ई.आर.टी. पाठ्यचर्या और पाठ्यपुस्तकों को अंगीकार किया है।

केरल और उत्तराखण्ड ने एन.सी.एफ.–2005 के आधार पर अपनी स्वयं की पाठ्यचर्या विकसित करने का प्रयास किया है। आठ राज्यों, नामतः बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मणिपुर, मेघालय, मिज़ोरम, उड़ीसा और पंजाब में संदर्भ तत्व जोड़ कर एन.सी.ई.आर.टी. पाठ्यचर्या को अपनाया गया है। नागालैंड और कर्नाटक की पाठ्यचर्या नई और पुरानी पाठ्यचर्याओं का मिश्रण है। उ. प्र. ने कक्षा 1 से 8 तक पाठ्यचर्या में संशोधन की प्रक्रिया पहले ही आरंभ कर दी है और यह एन.सी.एफ.–2005 के प्रकाश में माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं के लिए पाठ्यचर्या में संशोधन पर विचार कर रहा है।

कुछ राज्यों जैसे तमिलनाडु और हरियाणा ने अपनी अध्यापक शिक्षा पाठ्यचर्याओं में संशोधन किया है। कुछ अन्य राज्य भी परीक्षा सुधारों, स्कूल के केलेण्डर और पाठ्यचर्या सुधार के समय प्रबंधन पक्षों पर कार्यरत हैं।

एन.सी.ई.आर.टी. ने क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों, सी.आई.ई.टी., पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. तथा एन.आई.ई. के विभिन्न विभागों के संकाय से एन.सी.ई.आर.टी. में एक विशेषज्ञ दल का गठन किया है जो एन.सी.एफ.–2005 के कार्यान्वयन के लिए राज्यों को शैक्षिक सहायता प्रदान करें।

गोष्ठियां और कार्यशालाएं

एन.सी.ई.आर.टी. एडूसेट समन्वय बैठक

विशेष आवश्यकताओं वाले समूहों के लिए शिक्षा विभाग ने गुजरात, हरियाणा, पंजाब, उ.प्र., म.प्र., बिहार, दिल्ली, महाराष्ट्र, हिमाचल प्रदेश, जम्मू और कश्मीर, राजस्थान, छत्तीसगढ़ और उत्तराखण्ड जैसे हिंदी भाषी राज्यों में स्थित एन.सी.ई.आर.टी. एडूसेट नेटवर्क केंद्र के 14 केंद्र समन्वयकों के साथ 22 जून 2008 को एक दिवसीय बैठक का आयोजन किया। यह ई.ए.सी. द्वारा अनुमोदित कार्यक्रम का पहला चरण था, जिसका नाम था ''एन.सी.एफ.–2005 और राष्ट्रीय फ़ोकस समूह रिपोर्टों में बताए अनुसार विशेष शिक्षा समूहों, जिनकी विशेष आवश्यकताएं हैं की चिंताओं और मुद्दों के बारे में अध्यापक शिक्षकों के लिए टैली कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से अभिविन्यास कार्यक्रम।'' यह विभाग द्वारा लिया गया एक नया कार्यक्रम है। कार्यक्रम के दूसरे चरण में सी.आई.ई.टी. स्टूडियों में 2 दिवसीय जीवंत प्रसारण के कार्यक्रम का दूसरा चरण आयोजित किया जाएगा। कार्यक्रम का विशिष्ट उद्देश्य विभिन्न विशेष शैक्षिक आवश्यकता समूहों (अनुसूचित जाति / अनुसूचित जनजाति तथा अल्पसंख्यक समूह सहित) की चिंताओं और मुद्दों पर अध्यापक शिक्षकों को उन्मुख बनाना है, जैसा कि एन.सी.एफ.–2005 और फ़ोकस समूह की रिपोर्टों में कहा गया है। टैली कॉन्फ्रेंसिंग पाठ्यचर्या में बदलाव और उसे संदर्भ से जोड़ने, समावेश – कौशल और दक्षताएं, भ्रांति पूर्ण मनोवृत्ति और वास्तविकता; समावेश में अध्यापक शिक्षकों की भूमिका, सहभागिता पूर्ण अधिगम, मूल्यांकन और व्यवस्था में सुधार जैसे मुद्दों पर केंद्रित होगी।

प्रत्येक केंद्र में इस कार्यक्रम में डी.आई.ई.टी. के लगभग 20 अध्यापक–शिक्षक भाग लेंगे। कुल मिलाकर इस कार्यक्रम के माध्यम से 280 अध्यापक शिक्षकों को अभिविन्यास किया जाएगा। सी.आई.ई.टी. के एक विशेषज्ञ को जीवंत प्रसारण के तकनीकी पक्षों से संबंधित प्रश्नों के उत्तर देने के लिए आमंत्रित किया जाएगा।

समन्वयकों ने सुझाव दिया की टैली कॉन्फ्रेंसिंग के दौरान अधिक समय आबंटित किया जाए ताकि प्रतिभागियों के अवलोकन और प्रश्नों को शामिल किया जा सके।

सी.आई.ई.टी.–एस.आई.ई.टी. की समन्वय बैठक

सी.आई.ई.टी – एस.आई.ई.टी. की समन्वय बैठक का आयोजन 10 अप्रैल 2008 को किया गया। श्री एस सी खुंटिया, संयुक्त सचिव और श्री पी के मोहंती उपशिक्षा सलाहकार,

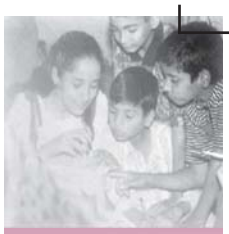

मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने बैठक को संबोधित किया। आंध्र प्रदेश, केरल, महाराष्ट्र और उड़ीसा के एस.आई.ई.टी. ने पिछले वर्ष और इस वर्ष उनके द्वारा की गई गतिविधियों का प्रस्तुतीकरण किया।

यह निर्णय लिया गया कि एस.आई.ई.टी. और सी. आई.ई.टी. मल्टी मीडिया प्रोग्राम के विकास में आगे बढ़ें और स्वयं को केवल प्रसारण के लिए कार्यक्रमों के निर्माण तक सीमित न रखें। मल्टी मीडिया आपसी क्रिया कार्यक्रमों के विकास पर बल दिया जाए। इस विषय में यह निर्णय लिया गया कि सी.बी.एस.ई. एवं राज्य बोर्डों के कक्षा 9 और 10 के अंग्रेज़ी, गणित और विज्ञान विषयों की पाठ्यचर्याओं की समीक्षा की जाए एवं इनमें से सामान्य केंद्रिक विषयों को चुना जाए तथा इन्हें मीडिया कार्यक्रमों के विकास के लिए 40-60 के अनुपात में सी.आई.ई.टी. और एस.आई.ई.टी. के बीच बांट दिया जाए।

कार्यक्रम सलाहकार समिति की 43वीं बैठक

एन.सी.ई.आर.टी. की कार्यक्रम सलाहकार समिति की 43वीं बैठक का आयोजन 8-9 अप्रैल, 2008 के बीच किया गया। पी.एसी. का महत्त्व बताते हुए प्रोफ़ेसर एम एस खापरडे, प्रमुख पी.पी.एम.ए.डी. ने एन.सी.ई.आर.टी. की कार्यक्रम प्रसंसाधन प्रक्रिया को समझाया। अपने आरंभिक उद्‌बोधन में प्रोफ़ेसर कृष्ण कुमार, निर्देशक, एन.सी.ई.आर.टी. ने एन.सी.ई.आर.टी.द्वारा किए गए महत्त्वपूर्ण उपायों के माध्यम से स्कूली शिक्षा सुधार में 11वीं योजना के दौरान एन. सी.ई.आर.टी. की भूमिका पर प्रकाश डाला, जैसे कि, सर्वशिक्षा अभियान पर इसका फ़ोकस और इसके गुणवत्ता संबंधी पक्ष, माध्यमिक शिक्षा का सार्वभौमीकरण आदि। निदेशक ने अनुसंधान प्राप्तियों के प्रसार की आवश्यकता पर बल दिया विशेष रूप से परीक्षा सुधारों के क्षेत्र में, बच्चों के तनाव और शांति तथा नैतिक शिक्षा पर। प्रोफ़ेसर जी रविन्द्र, संयुक्त निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. ने बहु-विषयक परियोजनाएँ और आवश्यकता आधारित अनुसंधान करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कार्यक्रम के लिए प्रस्तावित बजट के अनुकूलतम उपयोग पर भी बल दिया। श्री एस सी खुंटिया, संयुक्त सचिव (स्कूल), मानव संसाधन विकास मंत्रालय, ने 8वें अखिल भारतीय विद्यालय शिक्षा सर्वेक्षण के कार्यान्वयन में एन.सी.ई.आर.टी. को सभी अनिवार्य समर्थन देने का आश्वासन दिया और आशा व्यक्त की कि एन.सी.ई.आर.टी. स्कूलों में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी को प्रोत्साहन देने में अग्रणी रहेगा, विशेष रूप से सहायक शिक्षा और स्वयं अधि गम्यता सामग्रियों को ई-सामग्री के विकास द्वारा सहायता देना। इस बैठक में वर्ष 2008-09 के लिए एन.सी.ई.आर.टी. के सभी घटकों के 500 से अधिक कार्यक्रमों पर विचार किया गया और वर्ष 2007-08 के दौरान एन.सी.ई.आर.टी. के कार्यक्रमों की प्रगति का मूल्यांकन किया गया।

तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा मॉड्यूल

नयी दिल्ली में स्थित यूनेस्को का कार्यालय समाज के उपेक्षित वर्गों के साथ किसानों, कारखानों के कामगारों, पारंपरिक शिल्पकारों और दस्तकारों के लिए जीवन और तकनीकी कौशल विकसित करने हेतु एक मॉड्यूल का विकास कर रहा है। पी. एस.एस.सी.आई.वी.ई. और यूनेस्को के बीच यूनेस्को के लाइफ किट के तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा मॉड्यूल के विकास पर एक परामर्शी परियोजना की एक संविदा पर हस्ताक्षर किए गए। कृषि, अभियांत्रिकी और गृह विज्ञान से संबंधित विभिन्न विषयों पर 10 टी.वी.ई. मॉड्यूल तैयार किए गए और इन्हें मार्च 2008 के दौरान परियोजना समन्वयक डॉ. हूमा मसूद को सौंपा गया जो नयी दिल्ली में यूनेस्को कार्यालय की राष्ट्रीय कार्यक्रम अधिकारी हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली में विशेषज्ञों और संसाधन व्यक्तियों की एक कार्यकारी समूह बैठक का आयोजन मॉड्यूलों की समीक्षा के लिए 23 से 25 जून 2008 के दौरान किया गया। इसमें कुल मिलाकर 20 विशेषज्ञ संसाधन व्यक्तियों, उद्योग तथा उद्योग संघों के प्रतिनिधियों, कृषि वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों, सामाजिक वैज्ञानिकों और शिक्षा कर्मियों ने इस तीन-दिवसीय बैठक में भाग लिया। प्रोफ़ेसर पूनम अग्रवाल, संयुक्त निदेशक, पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल ने कार्यक्रम के उद्देश्यों और साथ ही टी.ई.वी. मॉड्यूल के मूल्यांकन के प्रयोजन हेतु विकसित पात्रता मानदण्डों के बारे में प्रतिभागियों को संक्षिप्त में जानकारी दी। डॉ. मसूद ने बताया कि इस परियोजना का उद्देश्य क्या है तथा टी.वी.ई. माड्यूलों की विषय-वस्तु में जेंडर संबंधी मुद्दों, कार्य करने का अधिकार, उचित पारिश्रमिक पाने का अधिकार, सामाजिक लाभ (उदाहरण के लिए सब्सिडी, बीमा आदि) जैसे विभिन्न सामाजिक पक्षों को सरकारी योजनाओं के साथ समेकित करने की आवश्यकता पर भी बल दिया ताकि लाभार्थी उपयुक्त आजीविका और अच्छे स्तर के रहन-सहन के लिए मॉड्यूलों के माध्यम से अनिवार्य कौशल अर्जित कर सके। विशेषज्ञों द्वारा विकसित 10 टी.वी.ई. मॉड्यूलों की समीक्षा की गई।

इस मॉड्यूल का उपयोग अनेक प्रकार के लक्ष्य समूह को कौशल प्रशिक्षण देने हेतु मानव संसाधन विकास मंत्रालय, श्रम और रोजगार मंत्रालय, एन.आई.ओ.एस., गैर

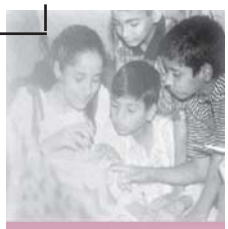

सरकारी संगठनों आदि द्वारा चलाए जा रहे वी.ई.टी. संस्थानों के माध्यम से किया जाएगा। इस कार्यक्रम का समन्वय डॉ. वी एस मेहरोत्रा, प्राध्यापक, कृषि प्रभाग, पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. ने किया।

यूनेस्को मॉड्यूल का विकास

अभिविन्यास एवं प्रशिक्षण

सहकारी विद्यालयों के प्रधानाचार्यों और शिक्षकों का एक अभिविन्यास सह प्रशिक्षण 2 वर्षीय बी. एड (माध्यमिक) और 4 वर्षीय समेकित बी. एस.सी., बी. एड पाठ्यक्रम की संरचना पर 9-10 जून 2008 के बीच आयोजित किया गया, जिसमें शिक्षण और संबंधित क्षेत्र अनुभवों में इंटर्नशिप का विशेष संदर्भ निहित था। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. के के खरे, क्षेत्रीय शिक्षण संस्थान, भोपाल थे।

शोध पत्र प्रस्तुतीकरण

- 24 जून 2008 को डॉ. गौरी श्रीवास्तव ने ''शेल्टर्ड स्टेटिड, ट्रबल्र्ड पीपल्स, थ्रेटेंड कल्चर्स - कंटेम्पररी प्रॉसपेक्ट्स एण्ड चेलेंजिस फॉर एशियाज़ चेंज मेकर्स'' के एशियाई स्कोलरशिप फाउंडेशन के 11वें वार्षिक अध्येता सम्मेलन के अवसर पर ए.एस.एफ. बैंकॉक में ''जेंडर एण्ड पीस - एजुकेशन पॉलिसी, करीकुलम इंग्लिश, एनवायर्नमेंट स्टडीज़ एण्ड सोशल स्टडीज़ टेक्स्ट बुक ऑफ रिपब्लिक ऑफ मालदीव्स'' विषय पर एक शोध पत्र प्रस्तुत किया।
- डॉ. पी के मंडल ने शिक्षा विभाग, दिल्ली सरकार की ओर से विश्व बैंक के सहयोग से आयोजित ''क्वालिटी इन सेकेंडरी एजुकेशन'' पर एक गोष्ठी में भाग लिया, जिसका आयोजन 29 मई 2008 को भारत पर्यावास केंद्र, नयी दिल्ली में किया गया था। इस सम्मेलन का आयोजन सी.टी.एस.ए., नयी दिल्ली के वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यों के लिए 28 - 30 मई 2008 के बीच किया गया था।
- डॉ. अशिता रविन्द्रम ने भारत पर्यावास केंद्र, नयी दिल्ली में यूनिसेफ और आई.एल.ओ. के सहयोग से 12 जून 2008 को बाल श्रम के विरुद्ध विश्व दिवस को मनाने के लिए आयोजित ''एजुकेशन - द राइट रिसपॉन्स ऑफ चाइल्ड लेबर'' विषय-वस्तु पर मीडिया सम्मेलन में भाग लिया।
- डॉ. सुनीता फरक्या, प्राध्यापक, वनस्पति, डी.ई.एस.ए., क्षेत्रीय शिक्षण संस्थान अजमेर द्वारा जनरल ऑफ बायोसाइंस एण्ड बायो इंजीनियरिंग, खण्ड-105, फरवरी 08 के अंक में ''एक्सोजिनस होर्मोन्स अफेक्टिंग मोर्फोलॉजी एण्ड बायोसिंथेटिक पोटेंशियल ऑफ हेयरी रूटलाइन (एल.वाई.आर.2आई.) ऑफ लाइनम एल्बम'' नामक शोध पत्र प्रकाशित किया गया। इस अनुसंधान पत्र में पोडोफिलोटॉक्सिन के उत्पादन का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है जो कैंसर रोधी दवाओं का एक प्रीकर्सर है और संवर्धनों में इसे एग्रोबैक्टीरियम प्रजातियों से रूपांतरित किया जाता हैं। इस बात की आगे जांच की गई की पोडोफिलोटॉक्सिन का उत्पादन और चुने गए संवर्धन की आकारिकी संवर्धन माध्यम में पादप वृद्धि विनियामकों की बाह्य आपूर्ति से किस प्रकार प्रभावित होती है।
- वेस्टर्न विसायास कॉलेज ऑफ साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, ला पाज़ लोइलो सिटी, फिलीपीन्स के आमंत्रण पर प्रोफ़ेसर पूनम अग्रवाल, संयुक्त निदेशक पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. ने 13-16 अप्रैल 2008 के बीच यूनेवोक नेटवर्क के अंदर उन्नत नेटवर्किंग तथा सहयोग के माध्यम से टी.वी.ई.टी. में पाठ्यक्रम नवाचारों और सर्वोत्तम प्रथाओं पर एक उप क्षेत्रीय गोष्ठी में भाग लिया तथा देश का शोध पत्र प्रस्तुत किया।
- प्रोफ़ेसर पूनम अग्रवाल, संयुक्त निदेशक, पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. में 4 और 5 अप्रैल 2008 को वी वी गिरी राष्ट्रीय श्रम संस्थान में और 9 मई 2008 को होटल ताज मानसिंह, नयी दिल्ली में श्रम और रोजगार मंत्रालय तथा अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन द्वारा आयोजित राष्ट्रीय कौशल विकास नीति पर 2 परामर्श बैठकों में भाग लिया।

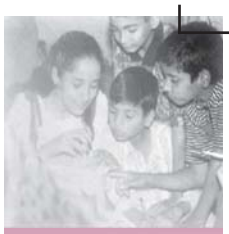

भाषा और उसके परे

संस्कृत साहित्य में वैज्ञानिक विचारों पर स्रोत पुस्तक

संस्कृत साहित्य में अनेक वैज्ञानिक ज्ञान निहित हैं जैसे कि गणित, ज्योतिष विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान, कृषि विज्ञान, वास्तुकला, शिल्पकला आदि। भाषा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी. ने संस्कृत भाषा में वैज्ञानिक विचारों पर स्रोत पुस्तक को तैयार करने की एक परियोजना ली है। इस परियोजना के तहत निम्नलिखित मोनोग्राफ के हिंदी संस्करण की पाण्डुलिपि तैयार की गई है–1) संस्कृत में चिकित्सा विज्ञान, 2) संस्कृत में कृषि विज्ञान और 3) संस्कृत में पर्यावरण विज्ञान।

प्रोफ़ेसर के के मिश्रा, परियोजना के समन्वयक ने परियोजना के उद्देश्यों को समझाया और 23–27 जून 2008 के दौरान आयोजित एक कार्यशाला में संस्कृत भाषा में उपलब्ध प्राचीन भारतीय गणित के महत्त्व पर प्रकाश डाला। इस खण्ड का प्रयोजन आधुनिक गणित के शिक्षकों और छात्रों को गणित संबंधी ज्ञान एवं प्राचीन भारत की तकनीकों से परिचित कराना है, ताकि वे बेहतर रूप से अपनी समस्याओं को सुलझा सकें। ऐसा माना जाता है कि वैदिक गणित के माध्यम से सभी गणनाएं अत्यंत सरल और आसान रूप में की जा सकती हैं।

भाषा क्षमता पर कार्यशाला

क्षेत्रीय शिक्षण संस्थान, मैसूर के प्रौद्योगिकी खण्ड में माध्यमिक चरण के हिंदी शिक्षकों के लिए एक तीन–दिवसीय अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसका उद्घाटन जी टी भंडगे, प्रधानाचार्य, क्षेत्रीय शिक्षण संस्थान मैसूर द्वारा 11 जून 2008 को किया गया।

उन्होंने कहा कि भाषा के शिक्षकों का प्रमुख दायित्व छात्रों में भाषा की प्रभावी क्षमता का विकास करना है, क्योंकि भाषा ही विचारों का वाहक है। उन्होंने आगे कहा कि भाषाओं को सीखने का कार्य उचित पर्यवेक्षण और उचित रूप से सुनने के माध्यम से होता है। उन्होंने सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से वंचित वर्गों के बच्चों को सहायता देने में भाषा शिक्षकों की भूमिका पर भी चर्चा की।

इसमें भाग लेने वाले प्रतिभागी केंद्रीय विद्यालयों, नवोदय विद्यालयों तथा सी.बी.एस.ई. संबद्ध विद्यालयों के शिक्षक थे। संसाधन व्यक्तियों में क्षेत्रीय शिक्षण संस्थान मैसूर और एन.सी.ई.आर.टी. के संकाय सदस्य शामिल थे।

एन.सी.एफ.–2005 की रिपोर्ट में भाषा की पाठ्यपुस्तकों के शिक्षण में इन शिक्षकों की भूमिका को सार्थक बनाने पर जानकारी दी गई है। इस कार्यक्रम का समन्वय डॉ. स्नेह लता प्रसाद, प्राध्यापक हिंदी, भाषा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी. ने किया।

क्षमता निर्माण कार्यक्रम

प्रशिक्षण

कंप्यूटर शिक्षा और प्रौद्योगिकीय सहायता विभाग द्वारा 2–13 जून 2008 के बीच ''यूज़ ऑफ आई टी टूल्स एण्ड आई.टी. बेस्ड लर्निंग रिसोर्सिस इन स्कूल एजुकेशन'' विषय पर 12 दिवसीय अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें विभिन्न राज्यों के अनुसूचित जाति / अनुसूचित जनजाति श्रेणी के 11 अध्यापक शिक्षकों ने भाग लिया और प्रशिक्षण पाया। यह प्रशिक्षण राज्यों के एस.सी.ई.आर.टी. / एस.आई.ई. / डी.आई.ई.टी. के कर्मचारियों के लिए बनाया गया था।

पुनश्चर्या पाठ्यक्रम

- क्षेत्रीय शिक्षण संस्थान, अजमेर में 6–26 मई 2008 के दौरान जे.एन.वी. के 17 पी.जी.टी. (जीवविज्ञान) के लिए 21–दिवसीय पनुश्चर्या पाठ्यक्रम आयोजित किया गया था। यह कार्यक्रम जे.एन.वी. समिति, नयी दिल्ली के अनुरोध पर आयोजित किया गया था। शिक्षा के विभिन्न विषयों जैसे कि जीव विज्ञान शिक्षण और रचनात्मकता तथा जैव रिएक्टर और इसके अनुप्रयोग, अधोगामी प्रसंसाधन, आनुवांशिक रूप से रूपातंरित खाद्य पदार्थों को पाठ्यक्रम में शामिल करने पर चर्चा की गई। कंप्यूटर के व्यवहारिक उपयोग और शिक्षा विज्ञान तथा सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के साथ सामग्री ज्ञान को कैसे समेकित किया जाए, इस विषय पर बल दिया गया। प्रोफ़ेसर वी जी जाधव, प्रधानाचार्य, क्षेत्रीय शिक्षण संस्थान, अजमेर कार्यक्रम के निदेशक थे और डॉ. सुनीता फरक्या, प्राध्यापिका, वनस्पतिशास्त्र, क्षेत्रीय शिक्षण संस्थान, अजमेर शैक्षिक पाठ्यक्रम समन्वयक थीं।
- इसी प्रकार क्षेत्रीय शिक्षण संस्थान, अजमेर में 3–23 जून 2008 के बीच जवाहर नवोदय विद्यालयों के 19 पी.जी.टी. (भौतिकी) के लिए 21–दिवसीय पुनश्चर्या पाठ्यक्रम आयोजित किया गया था। यह कार्यक्रम जवाहर नवोदय

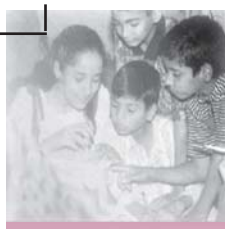

विद्यालय समिति, नयी दिल्ली के अनुरोध पर आयोजित किया गया था। इसमें कुल मिलाकर 84 व्याख्यान शामिल थे, जिसमें शिक्षा, भौतिकी और सूचना तथा संचार प्रौद्योगिकी के विषय प्रमुख थे। ये मुख्यत: विषयों के ज्ञान को शिक्षा विज्ञान और संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी के साथ समेकित करने के तरीकों, विज्ञान शिक्षा के माध्यम से नैतिकता, रचनात्मक मार्ग और समावेशी शिक्षा तथा ग्रेडिंग और मूल्यांकन आदि पर थे। कार्यक्रम के निदेशक प्रोफ़ेसर वी जी जाधव और शैक्षिक समन्वयक, डॉ. एस के पराड़कर थे, जो भौतिकी के प्राध्यापक हैं।

सी.आई.ई.टी.

शैक्षिक प्रौद्योगिकी में सक्रिय अनुसंधान पर एन.सी.ई.आर.टी. संकाय के क्षमता निर्माण हेतु एक तीन-दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन 14-16 मई 2008 को सी.आई.ई.टी. में किया गया था। इस कार्यक्रम में एन.सी.ई.आर.टी., आर.आई.ई.एस. और एस.आई.ई.टी. तथा जामिया मिलिया इस्लामिया के 20 संकाय सदस्यों ने भाग लिया।

कार्यक्रम के बाद कार्य अनुसंधान समूह से सदस्यों के लिए एक याहू समूह बनाया गया। कुछ प्रतिभागियों ने अपने अंतिम प्रस्ताव जमा कर दिए हैं। चुने गए प्रस्तावों को सी.आई.ई.टी. द्वारा फंड दिए जाएँगे ।

पुनश्चर्या पाठ्यक्रम

नवोदय विद्यालयों के गणित विषय के पी.जी.टी. के लिए एक 21-दिवसीय पुनश्चर्या पाठ्यक्रम का आयोजन 28 अप्रैल से 16 मई 2008 के बीच क्षेत्रीय शिक्षण संस्थान, मैसूर में किया गया। विभिन्न नवोदय विद्यालय समितियों के 28 पी.जी.टी. को कार्यक्रम में अभिविन्यास प्रदान किया गया।

अभ्यास शिक्षण पर कार्यशाला

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूर में अभ्यास शिक्षण के स्कूल आधारित अनुभवों और पर्यवेक्षण पर एक कार्यशाला का आयोजन 23-26 जून 2008 के दौरान किया गया। चार इंटर्नशिप केंद्रों के 47 शिक्षकों के क्षेत्रीय शिक्षण संस्थान मैसूर के सेवा कालीन पाठ्यक्रम के छात्रों को अभ्यास शिक्षण के पर्यवेक्षण में प्रशिक्षण दिया गया।

मास्टर प्रशिक्षक

गणित और विज्ञान शिक्षा विभाग द्वारा 2-5 जून 2008 के दौरान उच्च प्राथमिक स्तर के सी.बी.एस.ई. संबद्ध विद्यालयों के लिए विज्ञान और गणित में मास्टर प्रशिक्षकों के अभिविन्यास का आयोजन किया गया। डी.ई.एस.एम. के संकाय सदस्यों तथा बाहरी विशेषज्ञों ने आपसी क्रियात्मक रूप से आयोजित कार्यक्रम में संसाधन व्यक्तियों के रूप में कार्य किया। यह कार्यक्रम प्रतिभागियों को एन.सी.एफ.-2005 के विचारों और मार्गदर्शी सिद्धांतों, पाठ्यपुस्तकों में नए मार्ग, आकलन और मूल्यांकन से परिचित कराने पर केंद्रित था।

क्षेत्रीय शिक्षण संस्थान भोपाल में प्रशिक्षण कार्यक्रम

क्षेत्रीय शिक्षण संस्थान भोपाल में 19-22 मई 2008 के दौरान एन.सी.एफ.-2005 और अंग्रेज़ी, ई.वी.एस. तथा गणित विषयों के लिए कक्षा 5 की पाठ्यपुस्तकों की नई विशेषताओं के साथ के.वी.एस. और सी.बी.एस.ई. संबद्ध विद्यालयों के 100 मास्टर प्रशिक्षकों को परिचित कराने के लिए एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में 17 संसाधन व्यक्तियों ने योगदान दिया।

कक्षा 8 के लिए अंग्रेज़ी, विज्ञान, गणित और सामाजिक विज्ञान में पाठ्यपुस्तकों की सामग्री और विधि पर 26-29 मई 2008 के बीच के.वी.एस., एन.वी.एस. और सी.बी.एस.ई. संबद्ध विद्यालयों के 45 मास्टर प्रशिक्षकों के लिए इसी प्रकार का एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया था।

इन दोनों कार्यक्रमों का समन्वय संकाय अध्यक्ष, अनुदेश, क्षेत्रीय शिक्षण संस्थान भोपाल ने किया।

नए प्रकाशन

1. भारतीय आधुनिक शिक्षा - जुलाई - अक्तूबर 2006 (संयुक्त अंक)
2. भारतीय आधुनिक शिक्षा - अप्रैल 2006
3. जनरल ऑफ इंडियन एजुकेशन - नवम्बर 2007
4. स्कूल साइंस - जून 2007
5. पर्यावरण, भूमंडलीकरण और बाल शिक्षण
6. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा - 2005
7. सेवंथ ऑल इंडिया स्कूल एजुकेशन सर्वे (7वां ए.आई.एस.ई.एस.) प्री-प्राइमरी एजुकेशन एण्ड अल्टरनेटिव स्कूलिंग
8. जनरल ऑफ इंडियन एजुकेशन - फरवरी 2008
9. अरली चाइल्डहुड एजुकेशन एन इंट्रोडक्शन
10. भारतीय आधुनिक शिक्षा - जनवरी - अप्रैल 2007 (संयुक्त अंक)
11. प्राथमिक शिक्षक - जनवरी 2008
12. भारतीय आधुनिक शिक्षा - जुलाई - अक्तूबर 2008 (संयुक्त अंक)
13. जनरल ऑफ वेल्यू एजुकेशन - जनवरी और जुलाई 2006 (संयुक्त अंक)
14. पढ़ने की देहलीज़ पर

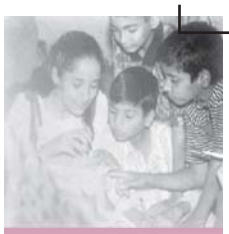

संक्षिप्त समाचार

एन.पी.ई.पी.

राष्ट्रीय जनसंख्या शिक्षा परियोजना (एन.पी.ई.पी.) ने एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली में 2008-09 के लिए द्वितीय परियोजना प्रगति समीक्षा बैठक का आयोजन किया। इस बैठक में 10 राज्यों के परियोजनाकर्मियों ने भाग लिया। भाग लेने वाले राज्यों ने वर्ष 2007-08 के दौरान कार्ययोजनाओं की स्थिति रिपोर्ट प्रस्तुत की तथा वर्ष 2008-09 के लिए बजट का प्रस्ताव दिया।

एन.आई.सी., शिलांग के साथ आभासी कक्षाकक्ष

प्रोफ़ेसर एम के सतपथी, प्रमुख, डी.ई.एस.एम. तथा आई. एस.टी., एन.ई.आर.आई.ई., शिलांग में एन.आई.सी., शिलांग की सहायता से 30 अप्रैल 2008 को उपग्रह सेवा का उपयोग करते हुए ई-अधिगम्यता के जरिए ''स्कूल स्तर पर पर्यावरण संबंधी शिक्षा'' नामक एक ई-मॉड्यूल का विकास किया। इस कार्यक्रम में मेघालय राज्य के ब्लॉक स्तर पर स्थित दस विभिन्न केंद्रों के स्कूल शिक्षकों को लाभ मिला। उन्होंने दर्शन, इतिहास और पर्यावरण शिक्षा के उद्देश्यों के मुद्दों पर विचार विमर्श किया। इस वार्ता के बाद प्रतिभागियों के साथ आपसी चर्चा की गई।

मास्टर संसाधन व्यक्ति प्रशिक्षण

डी.ई.आर.टी., मेघालय में विज्ञान और गणित के मास्टर संसाधन व्यक्तियों का प्रशिक्षण 23 और 24 मई 2008 को आयोजित किया गया। इस बैठक में प्रोफ़ेसर जी रविन्द्र, संयुक्त निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी., श्री सत्यम, सेवानिवृत्त आई.ए.एस. और पूर्व जांच अधिकारी, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, प्रोफ़ेसर डी के भट्टाचार्जी, सेवानिवृत्त, प्रमुख, डी.टी.ई.ई., एन.सी.ई.आर.टी. ने भाग लिया और इनके अलावा एन.ई.आर.आई.ई., शिलांग के संकाय तथा कर्मचारियों ने भाग लिया। यह बैठक अप्रशिक्षित शिक्षकों को प्रशिक्षण देने के लिए मुद्दों पर केंद्रित थी, ताकि मेघालय राज्य में शिक्षकों की गुणवत्ता में सुधार लाया जा सके। यह बैठक पूर्वोत्तर परिषद (एन.ई.सी.) के सहयोग से आयोजित की गई थी।

के.आर.पी. के लिए प्रशिक्षण

मुख्य संसाधन व्यक्तियों का एक प्रशिक्षण कार्यक्रम 9 - 10 जून 2008 के बीच सामग्री समृद्धिकरण, नई शिक्षण कार्यनीतियों तथा जनजातीय विद्यालयों में उनके कार्यान्वयन पर आयोजित किया गया। कार्यक्रम की समन्वयक डॉ. संध्या खुल्लर, क्षेत्रीय शिक्षण संस्थान, भोपाल थीं।

कार्यकारी समूह की बैठक

हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला में 3 से 7 जून 2008 के बीच सामान्य बीमा में पाठ्यचर्या और प्रशिक्षण मैनुअल आधारित दक्षता के विकास के लिए एक कार्यकारी समूह की बैठक आयोजित की गई। प्रोफ़ेसर सुनील गुप्ता, उप कुलपति, एच पी विश्वविद्यालय ने बैठक का उद्घाटन किया। इस बैठक में बीमा उद्योग के 6 प्रेक्टिशनरों और 4 शिक्षाविदों ने भाग लिया। इस बैठक में दक्षता आधारित पाठ्यचर्या और सामान्य बीमे के प्रशिक्षण मेनुअल का विकास किया गया। डॉ. आर के शुक्ला, प्राध्यापक, पी.एस.एस. सी.आई.वी.ई. ने बैठक का समन्वय किया।

सी.आई.आई.एल. द्वारा कार्यशाला

सुश्री एस देवी, व्याख्याता, डी.एल.एस.एस.ए.पी.ई., एन. ई.आर.आई.ई., शिलांग ने विश्व भारती, शांति निकेतन में 16 मई से 4 जून 2008 के दौरान केंद्रीय भारतीय भाषा संस्थान (सी.आई.आई.एल.) द्वारा आयोजित पूर्वोत्तर भाषाओं की सामान्य प्रशासनिक पदावली के संकलन हेतु एक कार्यशाला में भाग लिया।

कार्यशालाओं में प्रतिभागिता

प्रोफ़ेसर अवधेश कुमार मिश्रा, प्रमुख डी.एल.एस.एस.ए. पी.ई., एन.ई.आर.आई.ई., शिलांग ने एस.सी.ई.आर.टी., अगरतला में 25 अप्रैल 2008 को एस.सी.ई.आर.टी., त्रिपुरा द्वारा आयोजित एडूसेट नेटवर्क के उपयोग द्वारा त्रिपुरा के उच्च प्राथमिक शिक्षकों के अभिविन्यास पर एक कार्यशाला में भाग लिया और ''उच्च प्राथमिक स्तर पर अंग्रेषी भाषा पढ़ाने की पाठ-योजना और प्रश्न तैयार करना'' विषय पर संसाधन व्यक्ति के रूप में कार्य किया।

वे सर्वशिक्षा अभियान कर्मी और मिज़ोरम के शिक्षकों के साथ एक परामर्शदाता भी रहे, जिसका आयोजन सर्वशिक्षा अभियान राज्य मिशन, एज़वाल, मिज़ोरम में 7-19 जून 2008 के बीच सी.आई.ई.टी., एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा किया गया था। उन्होंने सर्वशिक्षा अभियान कर्मियों तथा स्कूली शिक्षकों के साथ ''व्याख्या के साथ पढ़ाई'', ''विद्यालय तथा कक्षाकक्ष में मुद्रण समृद्ध परिवेश'' '' बच्चों के साहित्य का चयन'', ''कहानी सुनाना'', ''पढ़ने का आकलन'', पर संसाध न व्यक्ति के रूप में कार्य किया।

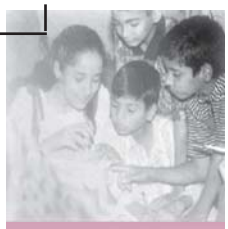

स्टाफ समाचार

नियुक्तियां

- 14.5.2004 को सुश्री तनु सरीन व्यक्तिगत सहायक नियुक्त
- 16.5.2008 को सुश्री पूनम स्टेनोग्राफर ग्रेड-।।। नियुक्त
- 16.5.2008 को डॉ. राणा प्रताप क्षेत्रीय शिक्षण संस्थान, अजमेर में व्याख्याता नियुक्त
- 02.06.2008 को श्री मुकेश कुमार, व्यक्तिगत सहायक नियुक्त
- 9.06.2008 को डॉ. सी. पदमजा प्राणी शास्त्र विभाग, क्षेत्रीय शिक्षण संस्थान, भोपाल में प्राध्यापक नियुक्त
- 24.06.2008 को डॉ. लाल सिंह दृश्य - श्रव्य मीडिया, सी. आई.ई.टी. में प्राध्यापक नियुक्त।

पदोन्नति

- श्री एस के दास, एपीसी को 13.11.06 (प्रात:) से प्रशासनिक अधिकारी नियुक्त किया गया।
- श्री शिवदान सिंह, अनुभाग अधिकारी को 01.07.08 (प्रात:) से अपर सचिव के पद पर पदोन्नत किया गया।
- श्री जगदीश चंद्र, समूह घ को 12.06.2007 से एल.डी.सी. के पद पर पदोन्नत किया गया।
- श्री पवन कुमार गिरी, समूह घ को 12.06.2007 से एल.डी. सी. के पद पर पदोन्नत किया गया।
- श्री के गोपालकृष्णा, व्यक्तिगत सहायक को 06.05.2008 से ए.पी.सी. के पद पर पदोन्नत किया गया।
- श्री आर के नायर, प्रशासनिक अधिकारी को 30.07.2007 से वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी के पद पर पदोन्नत किया गया।
- श्रीमती नरेश ग्रोवर, स्टेनोग्राफर को 14.05.2008 से व्यक्तिगत सहायक के पद पर पदोन्नत किया गया।

सेवानिवृत्ति

- श्री एस पी वशिष्ठ, वरिष्ठ लेखाकार 31.04.08 (दोपहर)।
- डॉ. एस ए शफी, प्रोफ़ेसर विज्ञान, क्षेत्रीय शिक्षण संस्थान, भोपाल 30.06.2008।

गुरुवार व्याख्यान मंच

एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली में डी.ई.आर.पी.पी. द्वारा निम्नलिखित व्याख्यानों का आयोजन किया गया।

- प्रोफ़ेसर एम एस यादव (सेवानिवृत्त), केस, बड़ौदा द्वारा ''कंस्ट्रक्टिविज़्म इन एजुकेशन विद ए फोकस ऑन पीडागोगी'' 15 मई 2008।
- डॉ. गौरी श्रीवास्तव, महिला अध्ययन विभाग द्वारा 15 जून 2008 को ''द मिस्टिक ऑफ मालदीव्स-ए-स्टडी ऑफ जेंडर एण्ड पीस''।

पिछला हाशिया

ठण्ड के मौसम में यदि आप किसी स्कूल में जाएं तो ऐसा कोई स्कूल नहीं होता जहां बच्चों को सर्दी और जुकाम न हो। पेट में सामान्य दर्द की घटनाएं भी काफी अधिक पाई जाती हैं। कुपोषण आज भी हमारी शिक्षा प्रणाली के सामने एक बड़ी चुनौती प्रस्तुत करता है जबकि कई मामलों में यह गरीबी से संबंध रखता है, फिर भी जानकारी और देखभाल की कमी का इसमें काफी योगदान है।

हमारी प्रणाली कुछ हद तक पाठ्यपुस्तकों पर केंद्रित है कि स्वास्थ्य जैसी मूलभूत बातें केवल इसीलिए उपेक्षित रह जाती हैं, क्योंकि यह पाठ्यपुस्तक केंद्रित शिक्षण और एक लिखित परीक्षा में स्वीकार्य नहीं है। यह एक आम मानवीय अनुभव है कि यदि शुरुआती बाल्यवस्था में स्वास्थ्य की उपेक्षा की जाती है तो समस्याएं बढ़ती जाती है और आगे चलकर इन्हें सुलझाना कठिन हो जाता है। प्राथमिक स्तर से भी आप देख सकते हैं कि स्कूल की समय-तालिका में स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा के लिए बहुत कम स्थान होता है। समय की कमी एक बात है; शिक्षकों के बीच प्रशिक्षण और संकल्पना बच्चों की वृद्धि के इस महत्त्वपूर्ण क्षेत्र में अपेक्षाकृत अधिक गंभीर है। बेशक आप स्वयं शिक्षकों को उनके व्यक्तिगत जीवन में स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों पर भ्रमित और कभी कभार प्रश्न उठाने योग्य तरीकों में उलझा हुआ पाते हैं। एन.सी.ई. आर.टी. ने हाल ही में स्वास्थ्य शिक्षा के लिए एक व्यापक पाठ्यचर्या का विकास किया है। समान प्रकार के क्षेत्रों में पिछले अनुभव को देखते हुए, जो पाठ्यपुस्तक आधारित शिक्षण में स्वीकार्य नहीं हैं, स्वास्थ्य के लिए एक समग्र आकलन विधि विकसित करने की एक समानांतर कार्यनीति आरंभ की गई है। इन दोनों प्रयासों में देखा गया कि स्वास्थ्य के व्यक्तिगत और सामाजिक, दोनों आयाम हैं। बच्चों और शिक्षकों के बीच यह जागरूकता विकसित करने की आवश्यकता होती है कि मानव स्वास्थ्य संसाधनों और जागरूकता की कमी प्राकृतिक परिवेश के गिरते स्तर और एक अक्षम सुधारात्मक प्रणाली जैसे कारकों का एक जटिल उत्पाद है। इस क्षेत्र में शिक्षा की एक महत्त्वपूर्ण भूमिका है परंतु जो लोग शिक्षा के कार्य में शामिल हैं, उन्हें पहले स्वास्थ्य को गणित तथा विज्ञान के समान महत्त्वपूर्ण मानने की आवश्यकता है।

कृष्ण कुमार

प्रकाशन मंडल

पी. राजाकुमार
नीरजा रश्मि
श्वेता उप्पल
रेखा अग्रवाल
अरुण चितकारा

वेबसाइट: www.ncert.nic.in
ई-मेल: publica@nda.vsnl.net.in

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा लेज़र टाइपसेट इनहाउस एवं गीता ऑफ़सेट प्रिंटर्स, सी-90, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फ़ेस-1, नयी दिल्ली 110 020 में मुद्रित।